निश्चय हो तभी तो आचरण में आये

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

बाबा के ज्ञान की हर बात, बाबा का ज्ञान हमारे सामने मुरली के स्वरूप में है। ज्ञान की हर बात को हमें यथार्थ रूप में समझना है। क्योंकि समझने से वो हमारी बुद्धि में छप जाती है। जब हम स्कूल में पढ़ते हैं तो सबसे पहली बात जब टीचर पढ़ाते हैं उस समय हमें अटेन्शन से पढ़ना होता है। हरेक को अपने स्टूडेंट लाइफ का अनुभव होगा कि जब टीचर पढ़ाते हैं उस समय से हम अटेन्शन से पढ़ते हैं तो वो एकदम क्लियर हो जाता है, बुद्धि में छप जाता है। जो स्कूल में क्लास में अटेन्शन से नहीं पढ़ते जिसके लिए कहते हैं कि शरीर से तो क्लास में होते हैं लेकिन मन बाहर होता है। अगर क्लास के टाइम टीचर से योग नहीं है, मुरली में आता है ना कि टीचर से योग चाहिए इसका अर्थ है कि टीचर जब पढ़ाते हैं तो उस समय हमें अटेन्शन से पढ़ना है। अगर उस समय अटेन्शन से नहीं पढ़ते तो अनुभव होगा कि बाद में कितनी बार पढ़ते हैं लेकिन वो क्लियरिटी(स्पष्टता) नहीं होती जो जब टीचर पढ़ाते हैं और ध्यान देने से होती है। इसलिए पहली बात है अटेन्शन।

दूसरी बात है कि स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं और उस समय हम पढ़ते हैं केवल उतना पढ़ने से स्टूडेंट फर्स्ट नम्बर नहीं ले सकता, लेकिन स्कूल में टीचर जो पढ़ाते हैं वो पढ़ने के बाद जो स्टूडेंट घर जाकर होमवर्क करते हैं, उस होमवर्क को एक्यूरेट करते हैं मतलब टीचर ने जो पढ़ाया उस पर जो स्टूडेंट व्यक्तिगत मेहनत करते हैं वो स्टूडेंट फर्स्ट नम्बर, फर्स्ट क्लास ले सकते हैं। ठीक वैसे ही ये आध्यात्मिक पढ़ाई, बाबा के ज्ञान की बातें केवल सुनने की होती तो बाबा इसको विद्यालय क्यों कहते! बाबा क्यों कहते हैं कि मैं तुम्हारा परम शिक्षक हूँ, ये स्पिरिचुअल यूनिवर्सिटी है। सिर्फ परिवार का रूप रखता, सिर्फ सत्संग का स्वरूप रखता लेकिन बाबा ने इसको स्पिरिचुअल यूनिवर्सिटी कहा, मतलब हम जो बातें सुनते हैं वो समझनी हैं, स्मृति में रखनी हैं। वो हमारे दिल-दिमाग में छपी हुई होनी चाहिए। इसलिए बाबा से योग, बाबा के प्रति अटेन्शन होना ज़रूरी है। और वो अटेन्शन तभी रहेगा, देखो दुनिया में आपका कोई प्रिय व्यक्ति कैसी भी बात

जो चीज़ आचरण में ला ही नहीं सकते तो वो बात बाबा क्यों बोलते? हम सबको ये निश्चय हो कि जो बाबा कहते हैं वो सत्य है और कल्याणकारी है। जब ये निश्चय हमें हो जाता है तब हमारी बुद्धि का भटकना समाप्त हो जाता है।

आपको कहेगा वो आपको अच्छी लगेगी, स्वीकार्य हो जायेगी। और जिससे आपका प्यार नहीं वो आपके कल्याण की बात भी कहेंगे तो भी वो आपको स्वीकार्य नहीं होगी। तो बाबा से प्यार, बाबा से योग ये बहुत ज़रूरी है और मुरली के समय इसलिए बाबा सदा हमें बताते हैं कि कैसे हमें मुरली सुननी है। बाबा एक ही शब्द में रोज़ हमें अटेंटिव(सचेत) करते हैं। बाबा कहते हैं कि जब बाबा के सामने बैठते हो तो ज्ञान स्वरूप होकर बैठो। आत्मभिमानी स्थिति में बैठो। बाप के सामने ऐसे ही आकर नहीं बैठ जाओ, जैसे कि नियम से आकर बैठ गये क्लास में। वो भी अच्छी बात है लेकिन अगर ज्ञान मुझे आचरण में लाना है तो ऐसे ही आकर बैठने से नहीं चलेगा। हमें लक्ष्यपूर्वक आना होगा। और अपनी आत्मभिमानी स्थिति में बैठना होगा कि स्वयं भगवान मुझ आत्मा को पढ़ा रहे हैं। स्वयं भगवान के महावाक्य मैं सुन रही हूँ या रहा हूँ। इस स्मृति, अनुभूति और स्थिति के साथ बाबा के महावाक्य हमें सुनने और समझने हैं। कई बार हम सुनते हैं, बाबा की बातों को समझते हैं लेकिन हम खुद लॉजिकली विवेक से बाबा की बातों से कन्विंस(मानना) नहीं होते। जिसको बाबा सरल शब्दों में कहते हैं कि सुनना, समझना, मानना, स्वीकार करना और निश्चय करना कि जो बाबा ने कहा वो सत्य है, कल्याणकारी है और जीवन में धारण करना सम्भव है तब बाबा ने कहा है।

कई बार हम अपना तर्क चलाते हैं कि बाबा जो कहते हैं बात तो सही है लेकिन जीवन में धारण करना बड़ा मुश्किल है। हम तो दुनिया में रहते हैं ना, गृहस्थी में रहते हैं ना तो आचरण में लाना कितना मुश्किल है। इस प्रकार हम अपना तर्क चलाते हैं और ये समझते हैं कि आप बहनें तो सेंटर पर रहती हैं, समर्पित हैं और झंझट आपको नहीं है इसलिए तो आप धारण कर सकते हैं लेकिन हम लोगों के लिए बहुत मुश्किल है। वास्तव में हमें विवेक से इस बात को समझना चाहिए कि कैसे बाबा प्रवृत्ति मार्ग के संसार के लिए ज्ञान देते हैं। क्योंकि संसार अनादि काल से प्रवृत्ति मार्ग का ही बना हुआ है, निवृत्ति मार्ग का नहीं। और बाबा भी इस संसार में स्वर्ग लाना चाहते हैं। प्रवृत्ति में पवित्रता स्थापन करना चाहते हैं। तो बाबा जब हम बच्चों को ज्ञान देते हैं तो ज़रूर बाबा को पता है ना कि हम गृहस्थ में हैं, हम कलियुगी दुनिया में हैं और ये जानते हुए भी बाबा हम बच्चों को कहते हैं इसका अर्थ यही हुआ ना कि ज़रूर हमारा जीवन में धारण करना पॉसिबल है तब तो बाबा कहते हैं। जो चीज़ आचरण में ला ही नहीं सकते तो वो बात बाबा क्यों बोलते? हम सबको ये निश्चय हो कि जो बाबा कहते हैं वो सत्य है और कल्याणकारी है। जब ये निश्चय हमें हो जाता है तब हमारी बुद्धि का भटकना समाप्त हो जाता है। हमारा एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर में, एक सत्संग से दूसरे सत्संग में, एक गुरू से दूसरे गुरू में, एक शास्त्र से दूसरे शास्त्र में भटकना समाप्त हो जाता है। मतलब भक्ति हमारी पूरी हो जाती है। इसको कहते हैं निश्चय। तो सुनना, समझना और फिर है स्वीकार करना, ये बहुत ज़रूरी है।

आस्का-ओडिशा। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, भुवनेश्वर से राजयोगिनी ब्र.कु. लीना दीदी, लोकसभा सांसद श्रीमति प्रमिला विशोई तथा अन्य भाई-बहनें।

कादमा-हरियाणा। 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' प्रोजेक्ट का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. उर्मिला दीदी,सह संपादिका,ज्ञानामृत,माउण्ट आबू, राजेश सांगवान हलका,अध्यक्ष,जननायक जनता पार्टी, डॉ. रोहित,वेटरनरी सर्जन, डॉ. निशा नरवाल,मेडिकल ऑफिसर, ब्र.कु. वसुधा बहन तथा अन्य।

सिरसागंज-उ.प्र.। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर माल्यार्पण करते हुए जिला अधिकारी विवेक मिश्रा, पूर्व आर्यव्रत बैंक मैनेजर जैनुलाब्दीन जी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीतांजलि बहन तथा ब्र.कु. शशि बहन।

टोंक-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ एवं नेहरू युवा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 121वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं संगोष्ठी में केन्द्र के लेखा एवं कार्यक्रम सहायक तुलसी राम मीना, ब्र.कु. अर्पना बहन, चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रेम चन्द मालाकार व उनकी पूरी टीम, केन्द्र के राष्ट्रीय युवा स्वयं सेवक सत्यनारायण मीना आदि उपस्थित रहे।

झोझूकलां-हरियाणा। बहरीन में आयोजित एशियन खेलों में अंडर 15 में कुश्ती में गोल्ड मेडल प्राप्त कर देश का नाम रोशन करने वाली रजनीता जांगड़ा व द्रोणाचार्य अवॉर्डी महावीर फोगाट को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. वसुधा बहन व ब्र.कु. ज्योति बहन। इस अवसर पर सरपंच दलवीर गांधी, पूर्व सरपंच राजेश सांगवान, समाजसेवी अशोक बंटी, समाजसेवी सुरेश पहलवान, बिशन सिंह आर्य आदि उपस्थित रहे।

आगरा-सिकंदरा(उ.प्र.)। 'कल्प तरू' परियोजना के अंतर्गत वृक्षारोपण करते हुए ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. धीरज भाई तथा अन्य भाई-बहनें।

डूंगरपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासनिक सेवा प्रभाग के अभियान 'आध्यात्मिकता द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में जिला कलेक्टर इन्द्रजीत यादव, पूर्व आईएएस ब्र.कु. सीताराम मीणा, माउण्ट आबू से प्रशासनिक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश भाई, अलवर से ब्र.कु. अनुभा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विजयलक्ष्मी दीदी, सागवाड़ा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पदमा बहन सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

छानी बड़ी-राज.। राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस पर सरकारी हॉस्पिटल में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. पूजा, सरपंच सुरेश बंसल, नर्सिंग स्टाफ तथा ब्र.कु. भगवती बहन।

मुजफ्फरनगर-बमनहेरी(उ.प्र.)। 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. तोषी बहन, ब्र.कु. सरिता बहन, डॉ. एम.एल. गर्ग तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बहल-हरियाणा। 'आज के बच्चे कल का भविष्य' विषयक समर कैम्प में आयोजित बाल नृत्य प्रतियोगिता में कुमारी कनक को प्रथम आने पर पुरस्कृत करते हुए थाना प्रभारी सब इंस्पेक्टर महेंद्र सिंह, बी.आर.सी.एम. लॉ कॉलेज की असिस्टेंट प्रोफेसर सुपर्णा शर्मा तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुन्तला बहन। इस अवसर पर दैनिक जागरण के स्थानीय पत्रकार पुरुषोत्तम भोल्याण व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।